साहित्य अकादेमी ने किया सच्चिदानंद जोशी के साथ कथा-संधि कार्यक्रम

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी की प्रतिष्ठित कार्यक्रम शृंखला कथा-संधि के अंतर्गत प्रख्यात कथाकार सच्चिदानंद जोशी के कथा पाठ का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम उन्होंने अपनी कहानी वन योगिनी का पाठ किया। कहानी एक ऐसी लडकी पर केंद्रित थी,जिसने आदिवासी परिवार से आने के बाद भी अपनी प्रतिभा के बल पर जिलाधिकारी का पद हासिल किया। लेकिन उसकी इस लक्ष्य तक पहुचने के पीछे एक साक्षात्कार में बैठे अध्यापक की वह टिप्पणी रही,जिसमें उन्होंने उसके आदिवासी होने और उससे मिलने वाली सुविधाओं पर तंज किया था। कहानी में वही अध्यापक को वह जिलाधिकारी बनने पर अपने कार्यालय में बुलाती है और धन्यवाद देती है कि आपके उन्हीं चुभते शब्दों के कारण आज मैं इस पद पर पहुंची हूं। उन्होंने दूसरी कहानी ऑल द बेस्ट शीर्षक से पढ़ी,जिसमें अधिकारी परिवार और उनके गार्ड के आपसी व्यवहार को बारीकियो से उजागर किया गया था। कहानी सुनाने से पहले उन्होंने अपनी कथा-यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि वे बड़े सौभाग्यशाली थे कि घर में मां मालती जोशी के रूप में एक बड़ी कथाकार मेरे आस-पास थी। मैंने अपनी पहली रचना जब उनको सुनाई तब उनको विश्वास नहीं हुआ कि उसे मैंने लिखा है। मैंने कभी भी उनके नाम का फायदा रचना छपवाने के लिए नहीं किया। मेरी रचनाएं धर्मयुग, रविवार एवं प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहीं और कई बार तो ऐसा हुआ कि धर्मयुग के एक ही अंक मेरी और उनकी रचनाएं साथ-साथ छपीं। मैं रंगमंच से भी जुड़ा रहा और अब नौकरी के विभिन्न दायित्वों के कारण लिखने का कम समय मिल पाता है। लेकिन सोशल मीडिया पर थोड़ा बहुत अवश्य लिखता रहता हूं। कई बार इस दबाव के चलते एक उपन्यास की परिकल्पना कहानी में सिमट जाती है। कार्यक्रम के पश्चात पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देते हुए।